MODEL ANS. KEY

❖ **निम्न प्रश्नों का उत्तर 15-15 शब्दों में दें।**

1. त्रिवर्ग का सार किसे और क्यों कहा जाता है?

उत्तर— धर्म, अर्थ, काम को त्रि—वर्ग और इनमें से सर्वप्रमुख धर्म को त्रि—वर्ग का सार कहा जाता है, क्योंकि धर्म के बिना अर्थ और काम नैतिक पतन की ओर ले जाते है। अत: मोक्ष के लिए अर्थ और काम के मूल में धर्म का होना आवश्यक है।

2. काम का महत्व क्या है?

उत्तर— सृष्टि निर्माण, विकास और निरंतरता में काम ही प्रमुख आधार है। साथ ही परिवार नामक संस्था की नींव ही काम है।

3. आश्रम व संबंधित पुरूषार्थ बताइए?

उत्तर—
1. ब्रह्मचर्य आश्रम = धर्म पुरूषार्थ
2. ग्रहस्थ आश्रम = अर्थ व काम पुरूषार्थ
3. वानप्रस्थ आश्रम = धर्म पुरूषार्थ
4. संन्यास आश्रम = मोक्ष पुरूषार्थ

4. पुरूषार्थ में मोक्ष का विवेचन करें।

उत्तर— मानव जीवन का चरम लक्ष्य जिसमें श्रवण, मनन, निदिध्यासन का पालन करते हुए समस्त दु:खों से आत्यंतिक प्रवृत्ति करते हुए आत्मानुभूति या आत्म—साक्षात्कार ही मोक्ष है।

5. धर्म से क्या तात्पर्य है?

उत्तर— धर्म : धृ धातु से निष्पन्न धर्म धारण करने के अर्थ में प्रयुक्त होता है जिसे सर्वमान्य रूप में कर्त्तव्य निर्धारण के अर्थ में स्वीकारा गया है। धर्म वे नियम हैं जिस पर चलकर न केवल व्यक्ति और समाज को उन्नति, कल्याण व यश मिलता है, अपितु समाज में शांति, संतुलन व सामंजस्य भी स्थापित होता है।

❖ **निम्न प्रश्नों का उत्तर 50-50 शब्दों में दें।**

6. पुरूषार्थ कितने है और उनके नाम बताइए?

उत्तर— पुरूष का अर्थ प्रयोजन अर्थात् पुरूषार्थ मनुष्य के उस प्रयोजन की ओर इंगित करता है। जिसकी प्राप्ति के लिए मनुष्य को प्रयास करना चाहिए। पुरूषार्थ चार है— धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष

1. धर्म : सांसारिक समृद्धि, आध्यात्मिक कल्याण, नैतिक कर्त्तव्य का पालन करना ही धर्म है।
2. नैतिक तरीके से प्राप्त भौतिक सम्पत्ति अर्थ है जो अन्य सभी पुरूषार्थो का साधन भी है।
3. स्वाभाविक एवं जन्मजात इच्छाओं का पूर्ण करना काम है क्योंकि इनके बिना आध्यात्मिकता भी और अग्रसर नहीं हो सकते है। अत: इसे भी पुरूषार्थ माना गया है।
4. श्रवण—मरण नीदिध्यासन करते हुए आत्मानुभूति व आत्म साक्षात्कार करना ही मोक्ष है, इससे दु:खों व जन्म—मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाती है और यही मानक का ध्येय है।

7. अर्थ और काम को पुरूषार्थ क्यों माना गया है?

उत्तर— भारतीय दर्शन, धर्म एवं संस्कृति की पुरूषार्थ की अवधारणा में अर्थ और काम को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है क्योंकि भौतिक संपदा के बिना धार्मिक क्रियाएँ नहीं हो सकती और न ही धर्म की प्राप्ति

हो सकती है। इसी तरह अर्थ के बिना काम की तृप्ति भी नहीं हो सकती और काम पूर्ति जीवन के लिए आवश्यक है। अर्थ एवं काम के मूल में धर्म आवश्यक है क्योंकि धर्म के बिना भौतिकता और आध्यात्मिकता में समन्वय नहीं किया जा सकता अर्थात् मोक्ष की ओर उन्मुख नहीं हुआ जा सकता।

सारतः अर्थाभाव में धर्म, काम, मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं अतः अर्थ को भी पुरूषार्थ माना गया इसी तरह मनुष्य भी एक प्राणी है, जिसकी स्वाभाविक इच्छाएँ, वासनाएँ इत्यादि होती है जिनके बिना मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं, अतः काम को पुरूषार्थ माना गया।

❖ **निम्न प्रश्नों का उत्तर 100 शब्दों में दें।**

8. काण्ट व गीता में समानता—असमानता।

उत्तर— *सर के क्लास के माध्यम से*

सारथि एकेडमी